शोध-मंथन Vol. VII No. 2, 2016 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास रंगभूमि में आर्थिक परिपेक्ष्य

डॉ. शीला चंदेल
सह–प्रवक्ता
राजकीय महाविधालय ,ठियोग

'रंगभूमि' में आर्थिक प्ररिप्रेक्ष्य

युग–वि"ोष का आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन एक–दूसरे से परस्पर जुड़ा रहता है। दे"ाकाल–सापेक्ष प्रेम चन्द का उपन्यास–साहित्य जीवन के विभिन्न पक्षों को स्प"ार्ा करता है। इन्होंने ग्राम्य जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लिखा है। जिसमें से आर्थिक पक्ष अधिक उभर कर आया है। इनका साहित्य ग्रामों की आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त, भूखे–प्यासे, नग्न, अर्ध–नग्न, मृत्यु के मुख में पड़े तथा जिजीविषा की आस को मन में समेटे असंख्य नर–नारिया की मर्मस्प"ार्ी करूण–कथा है। वे स्वयं गांव की धरती पर रहकर दुःख–सुख का उपभोग कर चुके थे। इनके युग में भारत की ग्राम व्यवस्था विश्रृंखलित हो चुकी थी औार उसके आर्थिक ढांचे में परिवर्तन हो रहा था। पराधीन भारत में व्यवसायी अंग्रेज आर्थिक व्यवस्था को परिवर्तित करने के पक्ष में थें। यहां की अर्थव्यवस्था को छिन्न–भिन्न करने के लिए वे सक्रिय थे। यहां उनके पदार्पण से पूर्व भारतीय समाज का ढांचा ग्राम इकाई पर आश्रित था यहां की आर्थिक व्यवस्था का आधार कृषि तथा हस्त–उद्योग धन्धें थें।

प्रेम चंद के उपन्यास 'रंगभूमि' में औद्योगिक विकास का मुख्य प्र"ान आदि से अन्त तक बना हुआ हैं। प्रेम चन्द औद्योगिक सभ्यता के दुर्गुणों की ओर इस उपन्यास में वि"ोष रूप से ध्यान आकृष्ट कराते है। इसमें ग्रामीण जीवन की सरलता औार सस्वच्छता के स्थान पर औद्यौगिक सभ्यता की जटिलता, पूंजी का केंद्रीकरण तथा अर्थ–तंत्र का भरपूर उल्लेख किया गया है। प्रेम चन्द की आर्थिक परिस्थितियाँ सांमतवाद के पूंजीवाद में बदलने का वह युग है, जिसके फलस्वरूप भारतीय समाज में कई नवीन सामाजिक वर्गों का उदय हुआ। नव–विकिसत वर्गों में मध्यवर्ग अधिक प्रमुख रहा क्योंकि स्वयं प्रेम चन्द का सम्बन्ध इस वर्ग के साथ था। पूंजीवाद सभ्यता का आधार धन हैं। इसमें केवल धन और म"ाीन का ही महत्व है, व्यक्ति का नहीं 'रंगभूमि' में पूंजीपति के स्वार्थ का जाल व्यापक होते दिखया गया है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में ब्रिटि"ा शासन की साम्राज्यवादी नीति को अपनाया है। जॉन सेवक जाति के इसाई हैं और चमड़े का व्यापर करते है। उनका गोदाम पण्डेपुर से एक मील की दूरी पर है, अतः वे यहां बराबर आते–जाते रहते है। उनके गोदाम के पीछे सूरदास की दस बीघा भूमि है, जिसे जॉन सेवक सिगरेट का कारखासना खोलने के लिए हथियाना चाहता हैं। सूरदास सत्य, न्याय तथा धर्म का स"ाक्त दस्तावेज है। भौतिक जगत के प्रति वह दृष्टिहीन है किन्तु उसकी

आंतरिक दृष्टि सदैव खुली है। मानवीय भावनाओं से पूर्ण सूरदास न्याय एवं धर्म की रक्षा हेतु उपन्यास का नायक बन जाता है। वह देवता न होकर एक शक्तिहीन प्राणी है अनीति उसके लिए असह्य है एक ओर जॉन सेवक उसकी भूमि छीनना चाहता है दूसरी ओर चिकानी–चुपड़ी बातें करते हुए कहता है – ''यहॉ एक कारखाना खोलूंगा, जिससे दे"ा औार जाति की उन्नति होगी, गरीबों का उपकार होगा, हजारों आदमियों की रोटियां चलेंगी। इसका य"ा भी तुम्हीं को होगा।'' वह अपनी वाक् चतुराई से निर्धन सूरदास की भूमि छीनने को तत्पर है। जॉन सेवक अपनी दे"ाभक्ति और दे"ा कल्याण की बातें भरत सिंह से करते हुए कहता है – ''हम देखतें हैं कि दे"ा में विदे"ा से करोड़ों रूपये के सिगरेट और सिगार आत है। हमारा कर्तव्य है कि इस धन–प्रवाह को विदे"ा जाने से रोकें। इसके बगैर हमारा आर्थिक जीवन पनप नहीं सकता। इस प्रकार जॉन सेवक अपनी सफलता का जाल बुनता नजर आता है। वह नैतिक तथा अनैतिक साधन अपनाकर सूरदास की जमीन को हड़पने में सफल हो जाता है। जॉन सेवक औद्यौगिक महत्व समझाते हुए कुंवर साहब को कहता है – ''हमारी जात का उद्धार कला–कौ"ाल और उद्योग की उन्नति में है। इस सिगरेट के कारखाने से कम से कम एक हजार आदमियों के जीवन की समस्या हल हो जाएगी और खेती के सिर से उनका बोझ टल जाएगा। जितनी जमीन एक आदमी अच्छी तरह जोत–बो सकता है, उसमें घर–भर का लगा रहना व्यर्थ है। मेरा कारखाना ऐसे बेकारों को अपनी रोटी कमाने का अवसर देगा।'' इस प्रकार प्रेम चंद ने उद्योगपतियों की लालसाओं को जॉन सेवक के माध्यम से वर्णित किया है

कुंवर साहब और जॉान सेवक में उद्योग से जुड़ा वार्तालाप होता है। कुवंर साहब इस व्यवसाय में कुछ संदेह प्रकट करते हैं कि आज तक इस प्रकार की कम्पनियां यहां क्यों नहीं खुली। इस पर जॉन सेवक के माध्यम से प्रेम चन्द ने उल्लेख किया है कि ि"ाक्षा की कमी के कारण यह संभव नहीं था। भारतीय समाज के रोम–रोम में गुलामी भरी हुई थी। वे लिखते हैं – ''अभी तक ि"ाक्षित समाज में व्यवसाय बुद्धि पैदा नहीं हुई। लोगों की नस–नस में गुलामी समाई हुई है। कानून और सरकारी नौकर के सिवा और किसी ओर निगाह जाती ही नही। दो–चार कम्पनियां खुली भी, उन्हें वि"ोषज्ञों के परामा"र्ा और अनुभव से लाभ उठाने का अवसर न मिला। अगर मिला भी तो बड़ा महंगा पड़ा। म"ाीनरी मंगाने में एक से दो देने पड़े, प्रबन्ध अच्छा न हो सका। विव"ा होकर कम्पनियों को कारोबार बन्द करना पड़ा। यहां प्रायः सभी कम्पनियों का यही हाल है। डायरैक्टरों की थैलियां भरी जाती है, हिस्से बेचने और विज्ञापन देने में लाखों रूपये उड़ा दिए जाते हैं, बड़ी उदारता से दलालों का आदर–सत्कार किया जाता है, ईमारतों में पूंजी का बड़ा भाग खर्च किया जाता है, मैनेजर भी बहुत वेतनभोगी रखा जाता है। परिणाम क्या होता है? डायरैक्टर अपनी जेब भरते हैं, मैनेजर अपना पुरस्कार भोगता है, दलाल अपनी दलाली लेता है; मतलब यह कि सारी पूंजी उपर ही उपर उड़ जाती है। जहां दे"ा की अर्थव्यवस्था कृषि तथा उद्योग–धन्धों पर निर्भर करती है। वहां इस प्रकार का औद्यौगिक प्रबन्धन भला क्या परिवर्तन ला सकता है। ग्राम्य जीवन में शोषण की जोंक प्रवे"ा पा चुकी थी और ग्रामीण कृषक के लिए इससे बच पाना कठिन–सा हो गया था। वह भी पैसे के स्वप्न देखा करता । 'रंगभूमि' में सूरदास अपनी जमीन को जॉन सेवक को लुटाते कल्पना करता है कि इससे प्राप्त धन से वह अब अच्छी जिन्दगी बसर करेगा। वह सोचता है – ''चार–पांच हजार बहुत होते है। अपने घर सेठ की तरह बैठा हुआ, चैन की बंसी बजाउंगा। चार आदमी घेरे रहेंगे, मुहल्ले में अपना मान होने लगेगा। ये ही लोग, जो आज मुझ पर रोब जमा रहे हैं, मेरा मुंह जोहेगे, मेरी खु"ाामद करेंगे।'' इससे प्रतीत होता है कि तत्कालीन समय पुंजीपतियों का था। पैसा ही जीवन का आधार माना जाता था। यूं भी अर्थ के बिना जीवन जीवन की सत्ता असंभव है। यही जीवन की धूरी है जो हमारे जीवन को पूर्ण रूाप से प्रभावित करती है, यह मानव जीवन का एक अत्याव"यक

तत्व है। किसी व्यक्ति के अपनी सम्पति को बढ़ाने के प्रयत्नों से दूसरे लोगों को आर्थिक या नैतिक हानि पहुंचाती है, तो अव"य यह प्र"न उठ खड़ा होता है कि क्या इस प्रकार के प्रयत्न व्यक्तिगत लाभ के लिए उचित हैं, जो दूसरों का गला काटे। ग्रामीण सभ्यता के प्रतीक सूरदास ने पूंजीवाद के विरूद्ध अपनी सोच व्यक्त की है कि कारखाना खुलते ही – ''मुहल्ले की रौनक बढ़ेगी, रोजगारी लोगों को फायदा भी खूब होगा। लेकिन जहां यह रौनक बढेगी, वहां ताड़ी–"राब का भी तो प्रचार बढ़ जाएगा, कसबियां भी तो आकर बस जांएगी, परदेसी आदमी हमारी बहू–बेटियों को घूरेंगे, कितना अधर्म होगा दिहात के किसान अपना काम छोड़कर मजूरी के लालच से दौड़ेगे, यहां बूरी–बूरी बातें सीखेंगे और अपने बुरे आचरण अपने गांव में फैलाएंगे। दिहातों की लड़कियां–बहुएं मजूरी करने आएंगी और यहां पैसे के लोभ में अपना धर्म बिगाड़ेगी। 'अर्थ' जीवन मूल्यों का आधार तो अव"य है, परन्तु कई बार यह जीवन को पटरी से बाहर भी धकेलने में कारगर हो जाता है। इसके लालच में वह व्यक्ति मानवीय मूल्यों की परवाह न करके अपने आद"ों को दांव पर लगा बैठता है। ग्रामीण जीवन 'अर्थ' की हीनता में शक्ति रहित है। न चाहते हुए भी सूरदास अपनी जमीन को लूटाता नजर आता है क्योंकि वह आर्थिक व राजनीतिक दृष्टि से कमजोर है

प्रेमचंद प्रत्येक समस्या को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखने के पक्षपाति थे। गांव में जो आर्थिक स्थिति बिगड़ती चली आ रही थी, उसके पीछे तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था उत्तरदायी थी। मजदूर और किसान के शोषण के लिए महाजन तथा जमींदार का हाथ बहुत लंबा था। उसकी आर्थिक स्थिति ऐसी न थी कि अपना वचन पूरा करने कि लिए अपने ऋण को चुकाने में सफल हो। लेन–देन के विषय में जगधर और ताहिर अली में वार्तालाप होता है –''मुंसी जी, हिसाब कब तक चुकता कीजिएगा? मैं कोई लखपति थोड़े ही हूं जो रोज मिठाईयां देता जाउं, चांहे दाम मिले या न मिले। आप जैसे दो–चार ग्राहक और मिल जाएं तो मेरा दिवाला ही निकल जाएं। लाईए रूपये दिलवाईए, अब हीला–हवाला न कीजिए, गांव–मुहल्ले की बहुत मुरौबत कर चुका। मेरे सिर भी तो महाजन का लहना–लगादा है। यह देखिए कागद, हिसाब कर दीजिए।''

प्रेम चंद को विदित था कि भारतीय ग्रामीण समाज की सबसे बड़ी समस्या ऋण समस्या थी। वह यह भी जानते थे कि कर्ज वह मेहमान है जो एक बार आकर लौटता नहीं है। इससे व्यक्ति असमंजस में पड़ा नजर आता है। प्रेम चंद 'रंगभूमि' में ताहिर अली के माध्यम से कहते हैं कि – ''देनदारों को हिसाब के दिन का उतना ही भय होता है, जितना पापियों को । वे 'दो–चार', 'बहुत–बहुत', 'आज–कल में', आदि अनि"चयात्मक शब्दों की आड़ लिया करते है। ऐसे वादे पूरे किए जाने के लिए नहीं केवल पानेवालों को टालने के लिए किए जाते है।''अपनी झूठी शान– शौकत में अत्याधिक खर्च बढाकर व्यक्ति ऋण के जाल में फंस जाते है। ताहिर अली मुं"ाी का काम करता है। परन्तु अपने धरेलू खर्चो को वेतन से कही अधिक कर डालता है। परिणाम यह होता है कि वह ऋणी बन जाता है। परन्तु गरीब ग्रामीणों की नजरों में वह फिर भी बडा ही है। प्रेम चन्द एक ग्रामीण के माध्यम से कहलवाता है– '' हुजूर बडे आदमियों का खर्च भी बडा होता है। आप ही लोगो की बदौलत गरीबो की गुजर होती है। घोडे की लात घोडा ही सह सकता है''। इस आर्थिक विषमता का मूल कारण यह था कि तत्कालीन समाज में पूंजीपति वर्ग के साथ सांमत वर्ग भी प्रभाव"ाली ढंग से सामाजिक आधार के रूप में मौजूद था। ' रंगभूमि के कुंवर भरत सिंह के माध्यम से प्रेम चन्द ने सांमत वर्ग के एक–दूसरे पहलू उजागर किया है। यह कभी सेवा समिति में भाग लेकर और कभी काऔंसिल का सदस्य बनकर अपने को राष्ट्रवादी और दे"ाभक्त सिद्ध करने का प्रयास करता है। लेकिन अपने लाभ और जॉन सेवक जैसे अंग्रेज पूंजीपति को खु"ा रखने के लिए वह उनकी सिगरेट कम्पनी में सौ–सौ रूपये के पांच सौ शेयर के लिए तैयार हैं। प्रभु सेवक उसके इस दोमुंहेपन का पर्दाफा"ा करते हुए कहते है।

–'' धूर्त, कायर, रंगा हुआ सियार। राष्ट्रीयता का दम भरता है, जाति की सेवा करेगा। .... उंगली में लहू लगाकर शहिदों में नाम लिखाना चाहता है।... यदि अपने प्राण और सम्पति इतनी ही प्यारी है, तो यह स्वांग क्यों भरते हो।

अपने आप को जनवादी समझने वाला कुंवर भरत सिंह संसार के सभी सुखों का खुलकर उपभोग करता है। इस सम्बन्ध में प्रेम चन्द का स्पष्ट विचार है कि इस दे"ा में सांमत या जमींदार जनतंत्र के समर्थक नही हो सकते। जो स्वयं रईस है, राज है, ताल्लुकेदार हैं, ऐसे व्यक्तियों के लिए जनतंत्र सबसे बडी बाधा हैं। ऐसे लोगों का तो जनवाद के साथ दूर का रि"ता भी नही हो सकता ।

प्रेम चन्द का विचार था कि आधुनिक सभ्यता का आधार मात्र धन है। धनवान अपनी इच्छाओं की पूर्ति सहज ही कर लेता है क्योंकि उसके पास पैसे की एक ऐसी संजीवनी बूटी है, जिससे सुंघा–सुंघाकर वह समस्त शासकीय अधिकारियों को अपने व"ा में कर लेता है।

रंगभूमि का जॉन सेवक जाति का इसाई है और चमडे का व्यापार करता है। जहां उसका चमडे. का व्यापार है, उसके ठीक पीछे सूरदास की जमीन है। जहां वह सिगरेट का कारखाना खोलना चाहता है, किन्तु सूरदास जमीन को देने से इन्कार करता है। उस जमीन को लेकर आन्दोलन खड़ा हो जाता हैं, तो जॉन सेवक का बेटा, प्रभू सेवक इन्हे समझाना चाहता है कि जमीन की इच्छा छोड़ दे, क्योकि इससे अ"ाांती पैदा हो सकती हैं। इस पर जॉन सेवक पूंजीपति की शक्ति का वास्तविक परिचय देते हुए कहता है–''मिस्टर क्लॉर्क या राजा महेन्द्र सिंह की हस्थी ही क्या, सारी खुदाई भी अब इस जमीन को मेरे हाथो से नही छीन सकती। मै सारे शहर में हलचल मचा दूंगा, सारे हिन्दुस्तान को हिला दूंगा।.... यह व्यपार का युग है। यूरोप के बडे–बडे शक्ति"ाली सम्राज्य पूंजीपतियो के इ"ाारों पर बनते–बिगडते है। किसी सरकार का साहस नही की उनकी इच्छा का विरोध करे । इस से स्पष्ट है कि प्रेम चन्द पूंजीपतियों की असीम शक्ति से परीचित है, दृढ़ प्र"ाासन शक्ति उसके ही इ"ाारे के नाचने के लिए विव"ा है, सांमत और जमींदार उसके चरणों की धूल है। पूंजी वह आधार है जिस पर पूंजीपति वर्ग मानवीय– मूल्य की उपेक्षा और मनमानी योजना तैयार करवाता है। जनता को अपार दुःख पहुंचाकर उन योजनाओ को फलीभूत करने का प्रयास किया जाता है। धर्म को धन के न"ो में जॉन सेवक तुच्छ मानता है। वह कहता है–संसार में जीवत रहने के लिए किसी व्यापार की जरूरत है, धर्म की नही, धर्म तो व्यपार का श्रृगार है। वह धनाधी"ाों ही को शोभा देता हैं। खुदा आप को कमाई दे, अवका"ा मिले, घर में फालतू रूपये हो, नमाज पढिए, हज किजिए, मस्जिद बनवाईए, कुंए खुदवाईए; तब मजहब है, खाली पेट खुदा का नाम लेना पाप है। वैसे भी अर्थ ही सकल सृष्टि का भगवान बन बैठा है। यदि ई"वर और धर्म को प्राप्त करना हो तो पहले अर्थ की पूजा करनी होगी ।

अर्थ की इस बढ़ती हुई प्रतिष्ठा ने हमारे बीच एक स्पर्धा की स्थिति पैदा कर दी हैं। चारों ओर भ्रष्टाचार की गंगोत्री बह रही है। प्रेम चन्द ने भ्रष्टाचार को भलीभांति रंगभूमि में वर्णित किया है। ठाकूर दीन और ताहिर अली ने कारखाने को लेकर बातचीत होती है कि यह कितने दिनों तक तैयार होगा और इस के निर्माण में विलम्ब क्यो हो रहा है ? तो ताहिर अली कहता है कि अभी नक"ाा तैयार नही हुआ हैं। प्रेम चन्द भ्रष्टाचार को ठाकूर दीन की वाणी के माध्यम से स्पष्ट करते है।–

इंजीनियर ने भी कुछ लिया होगा ? बड़ी बेईमान जात है हजूर , मैंने भी कुछ दिन ठेकेदारी की है; जो कमाता था, इंजीनियरों को खिला देता था। आखिर घबराकर छोड़ बैठा। इंजीनियर के भाई डॉक्टर होते है। रोगी चाहे

मरता हो, पर फीस लिए बिना बात न सुनेंगे । फीस के नाम से रियायत भी करोगे तो गाड़ी के किराए और दवा के दाम में कस लेगें। भ्रष्टाचार ने हमारे समाज को इस तरह प्रभावित कर डाला है कि गरीब व्यक्ति का जीना दुष्कर हो गया है। शासकीय तंत्र से जुड़ा हर व्यक्ति रि"वत लेने की ताक मे। बैठा है।,जिस प्रकार एक ि"ाकारी अपने ि"ाकार पर नि"ाना साधे होता है। कुवंर साहब अपने पुत्र विनय को घर वापिस लाने के लिए नायक राम को तैयार करते है और उसे कुछ पैसे भी देने का हुक्म अपने मुनीम को करते है। मुनीम उसे अपना सौभाग्य मानता है कि उसे कुछ मिल ही जाएगा । मुनीम लायक राम को अपने साथ आने का इ"ाारा करता है और कहता है–'' बोलो, कितना हमारा, कितना तुम्हारा ? '' इस पर लायक राम मुनीम से कहता है–'' तुम्हे अपना घर भरने की धुन है। तुम जैसे लालचियों को तो ऐसी जगह मारे जहां पानी न मिले। भ्रष्टाचार वह विष है जो धीरे – धीरे समाज की नसों में फैल कर उसे मृत बना देता है। ऐसी स्थिति में ऐसे प्रभावित वर्ग की सोच दब जाती है और उसकी स्थिति दयानीय बन जाती है।

विनय सिंह को कारावास से छोड़ दिया जाता है। जब लोगों को पता चलता है कि इसे छोड़ा गया है तो आपस में कहते हैं–

'शायद शर्त पर छूटा है' ?

'धन की लालसा सिर पर सवार है'।

'मार दो एक पत्थर, सिर फट जाए, यह भी हमारा दु"मन है'।

'दगाबाज है'।

'इतना बड़ा आदमी और थोड़े से धन के लिए ईमान बेच बैठा'।

इससे स्पष्ट होता है कि लोगो के रोम–रोम में भ्रष्टाचार का भय समाया हुआ है। वे विनय के छूटने का एकमात्र उपाय धन ही समझते है। वे सोचते है कि रि"वत देकर ही छोडा गया है।

विदे"ायों की नीतिया हमे"ाा भारतीय समाज को पतन की ओर ले जाने की रही । इनकी आर्थिक नीतियों के कारण भारत का आर्थिक ढ़ाचा चरमरा उठा। विदे"ायों का शोषण निरंतर भारतीयों पर चलता रहा । भारत में अग्रेजी व्यापार की दृष्टि से आए थे, किन्तु भारत की राजनैतिक परिस्थितियों के कारण जब दे"ा की सत्ता अंग्रेज अधिकारियों के हाथ में चली गई, तो उन्होनें शोषण को अपना सर्वश्रेष्ट नीति माना । अंग्रेजो ने भारत के उधोग धन्धों को समूल नष्ट करना अपना मुख्य ध्येय बनाया और दूसरी ओर विदे"ाी पूंजी से भारत में बड़े–बड़े उधोग धन्धों की स्थापना की। इन परिस्थितियों को प्रेम चन्द ने समीप से आंका है। विदे"ाी नीति का उच्चारण इन्होंने 'रंगभूमि' में जॉन सेवक के माध्यम से करवाया है–'मेरा कोई न दल है न होगा। मैं इसी विचार और उदे"य से जाऊगा कि स्वदे"ाी व्यापार की रक्षा कर सकूं। मैं प्रयत्न करूगा कि विदे"ाी वस्तुओं पर कठोरता से कर लगाया जाए, इस नीति का पालन किए बिना हमारा व्यापार कभी सफल नही होगा।

भैरों ग्रामीण सभ्यता को कलंकित करने वाला चेहरा है जो प्रतिदिन अपनी देवी–तुल्य औरत की पिटाई करता है, उसे सूरदास की झोपड़ी के सिवाए कही और नही मिलता । सूरदास सत्य और न्याय की साक्षात मूर्ति है। भैंरो अपनी पत्नी को सूरदास की झोपड़ी में रहता देख जल उठता है। वह एक रात झोपड़ी में से सूरदास की पैसों की पोटली चुरा लेता है और साथ ही साथ झोपड़ी में आग लगा देता है। परन्तु

सूरदास फिर भी शांत रहता है बाद में जब भैंरो को प"चाताप होता है तो वह कहता है कि मैने ही तुम्हारे घर में आग लगाई थी और तुम्हारे रूपये चुराए थे। परन्तु प्रेम चन्द ग्रामीण सभ्यता की उस पवित्र आत्मा, सूरदास के माध्यम से कहते है–'संसार में कौन है, जो कहे की मैं गंगा जल हूं। सब बड़े–बड़े साधु–सन्यासी माया–मोह में फंसे हुए हैं, तो हमारी–तुम्हारी क्या बात है'। कहने का भाव है कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति अर्थ तन्त्र के जाल में फंसकर अपवित्र हो गया है व्यक्ति का इसे छूट पाना असंभव सा प्रतीत होता है। भारतीय समाज के गरीब वर्ग का व्यक्ति अपने पापी पेट के लिए अपनी भावनाओं को पराधीन बना रहा है। प्रेम चन्द प्रभु सेवक के माध्यम से स्पष्ट करते है कि–'यहां कितने अपमान सहने पड़ते है, रोटियों के लिए दुसरों की गुलामी, अलनी इच्छाओं को पराधीन बना देना । नौकर अपने स्वामी को देखकर कैसा दबक जाता है, उसके मुखमंडल पर कितनी दीनता, कितना भय छा जाता है'। इस स्पष्ट होता है कि हमारी आर्थिक विषमता का मुख्य कारण गुलामी है, जिसने हमारी भावनाओं को बंदी बना दिया है।

प्रेम चन्द सूरदास के द्वारा प्रकट करते है–'जमीन निकल गई तो नाम डूब जाएगा। कुछ रूपये मिले भी तो किस काम के'। सूरदास जमीन के साथ अपनी जान देने के लिए उतारू है, इस मामले को महज उधोगीकरण विरोध मानना चाहिए । यह जन–जीवन के व्यापक मूल्यों की रक्षा का प्र"न हैं। प्रेम चन्द ने कृषि और छोटे उधोगो वाली समाज–व्यस्था की थी। वह गरीबो को अमीरो की जरूरते पूरी करने भर के लिए निर्धारित करना नही चाहते थे। बड़े उधोगों की उत्पादन पद्धति गरीबों की पहुंच से परे हो जाती है। विकसित प्रोधोगिकी में प्रभु सेवक जैसे वि"षज्ञों का महत्व बढ़ जाता है। सामान्य मजदूर की औकात घट जाती है। वह अपनी ही निर्मित वस्तुओं से बेगानापन का अनुभव करने लगता है। गरीबों की संकुचित क्रय"ाक्ति के संदर्भ में भी भारी आधुनिक उधोगों तथा उन में बनने वाली मंहगी वस्तुओं का कोई औचित्य नही है। प्रेम चन्द ऐसे उधोगों के सख्त विरोधी थे जो अन का उत्पादन रोक कर तम्बाकू जैसी न"ाीली चीजो का उत्पादन बढ़ते हो। इसमें अर्थ और स्वास्थ्य दोनो की हानि थी। जॉन सेवक का कारखाना विकसित प्रौधोंगिकी का नतीजा था। यह भारतीय अर्थव्यवस्था और भारतीय संस्कृति के लिए हानि कारक था। सूरदास की नैतिकता और धर्म–भावना सांस्कृतिक स्वास्थ्य के सदर्भ में ज्यादा जागृत होती है। सूरदास पूंजीवादी अपसंस्कृति के प्रति चिंता प्रकट करता है और सांकेतिक स्तर पर बतालना चहाता है कि कृषि व्यवस्था के स्थान पर पूंजीवाद के नाम पर बड़े आधुनिक उधोगों एवं विकसित तकनीक की वकालत करना प्रगगति"ाीलता नही है। प्रेम चन्द ने सूरदास के माध्यम से एक मानवीय और जनवादी समाज व्यवस्था के उदे"य से पूंजीवादी का विरोध किया है।

प्रेम चन्द ने तत्कालीन परिस्थितियों का बड़ी गहनता से अध्ययन किया है। इन्होने पाया कि अधिकारी वर्ग भी किसानों या ग्रामीणों के हितों की कोई बात नही करता था। वह गांव का दौरा करता था किन्तु स्थिति से परिचित होकर भी न्याय तथा सत्य का आश्रय नही लेता था। सरकारी हित को दृष्टि में रखता हुए वह सरकार का ही अधिक पक्ष था। प्रेम चन्द ने 'रंगभूमि' में उल्लेख किया है कि पूंजीपति और अधिकारी राजसिक और तामसिक कीट–पतग। तुल्य शोषक वर्ग है, जो बड़ी बेरहमी से ग्रामीणों का शोषण करते है। कारखाने में काम करने वाले मजदूरो के लिए रहने के लिए मकानों की व्यवस्था की जानी शेष थी। जिसके लिए पण्डेपुर का पूरा गांव खाली करवाया जाना था। इसके लिए मुआवजे की रकम का क्रमवार निर्धारण किया जाना, पटवारी और मूं"ाी का कार्य था। इस विषय में ने लिखा है' एक मुं"ाी मुहल्ले के निवासियों के नाम मकानों की हैसियत, पक्के है या कच्चे, पुराने है या नए, लम्बाई–चौड़ाई आदि की एक तालिका बनाने लगा । पटवारी और मुं"ाी घर–घर घूमने लगे। नायक राम मुखिया थे। उनका साथ रहना जरूरी था। इस वक्त सभी प्राणियों का भाग्य निर्णय इसी त्रिमूर्ति के हाथों में था। नायक राम की चढ़ बनी। दलाली करने लगे। लोगों से कहते,

निकलना तो पड़ेगा ही, अगर कुछ गम खाने सं मुआवजा बढ़ जाए, तो हरज ही क्या है। बैठे बिठाए, मुट्ठी गर्म होती थी, तो क्यो छोड़ते। इस प्रकार कर्मचारी समय मिलते शोषण प्रवृति का लाभ उठा ही लेते है। 'रंगभूमि' उपन्यास का नायक विनय सिंह राजस्थान के जसबन्त नगर जाता है और वहां की गरीब तथा शोषित जनता से बात कर उनमें नव चेतना पैदा करता है। इसी के परिणाम स्वरूप वहा के लोग छोटी–छोटी बातो के लिए सरकारी कर्मचारियों की सहायता लेना बन्द कर देते है। इसके फलस्वरूप कर्मचारियों की आमदनी घटने लगती है। अतः अधिकारी वर्ग विनय सिंह को बागी समझने लगता है, 'राज्य के अधिकारी वर्ग उससे बदनाम होते जाते है। दरोगाजी की मुट्ठिया गर्म नही होती, कामदार और अन्य कर्मचारियों के यहा मुकधमे नही आते, कुछ हथे नही चढ़ता। ये ही विद्रोह के अकुर है, उन्हे उखाड़ देने में ही कु"ाल है।

प्रेम चन्द अधिकारियों की धूसखोरी पर व्यंग्य करते हुए वीर पाल से कहलवाते है–'चोरी किजिए, डाके डालिए, घरों में आग लगाईए, गरीबों के गला काटिए कोई आप से नही बोलेगा। बस कर्मचारियों की मुट्ठियां गर्म करते रहिए। दिन–दिहाड़े खून कीजिए पर पुलिस की पूजा कर दीजिए, आप बैदाग छूट जाएगे। आप के बदले कोई बैकसूर फांसी पर लटका दिया जाएगा'। प्रेम चन्द का उदे"य इन कर्मचारियों के कच्चे चिट्ठें को खेलकर जनता को आगाह कर देना था।

इस प्रकार प्रेम चन्द ने 'रंगभूमी' में औधोगिक विकास से फैलने वाले कूप्रभाव, ग्रामीणों की ऋृण समस्या, पूजीपतियों के अनैतिक कार्या तथा कर्मचारी वर्ग के भ्रष्टचार का संजीव चित्रण किया है जो हमारे भारतीय समाज की आर्थिक समस्या को दिन–प्रतिदिन उजागर करते गए। इनके अतिरिक्त भारतीय समाज में अमीर और गरीब की स्थितियों का अंकन भी प्रेम चन्द ने भलीभंती किया है। इन्होनें मिसेज सेवक के माध्यम से कुवंर साहब के महल का वर्णन करवाया है– 'भवन क्या था, आमोद, विलास, रसज्ञता और वैवभ का क्रीड़ास्थल था। संगमरमर के फ"र्ा पर बहुमूल्य कालीन बिछे हुए थे। चलते समय उनमें पैर धंस जाते थे। दीवारों पर मनोहर पच्चीकारी; कमरों की दिवारें में बड़े–बड़े आदम–कद आईने, गुलकारी इतनी सुन्दर कि ऑखें मुग्ध हो जाएं, शी"ो की अमुल्य अल्भय वस्तुए प्राचीन चित्रकारों की विभूतिया चीनी के विलक्षण गुलदान, जापान, चीन, यूनान और ईारन की कला–निपुणा के उतम नमूनू, सोने के गमले, लखनऊ की बोलती मूर्तियां इटली के बने हुए हाथी दांत के पलंग, लकड़ी के नफीस ताक, दीवार गीरें, कि"तियां, ऑखों को लुभाने वाली पिजरों में चहकती हुई भांति–भांति चिड़ियां, आंगन में संगमरमर का हौज और उसके किनारे संगमरमर की अप्सराएं। और दूसरी ओर सूरदास ग्रामीण सभ्यता का यह दस्तावेज है जो मात्र झोपड़ी में जीवन बसर कर रहा है और भीख मांग कर अपना पेट भर रहा है। यह आर्थिक विषमता 'रंगभूमि में आदि से अन्त तक दिखाई देती है परन्तु फिर भी उपन्यास का नायक 'सूरदास' इस अन्तर्विरोध से टकराता है। वह भ्रष्टचार से कभी समझौता नही करता। वह जीवन को 'रंगभूमि मानता है। इस पर अपना खेल खेलता है। संघर्ष में हर बार हारता है, पर उसकी निगाह उतनी ही बार जीत पर रहती है । उसमें कहीं आत्मप्रतिष्ठा का लोभी नही है। वह कहता है कि कितना अंधेरा है कि हम, जो सत्तर पीढ़ियों से यहां आबाद है, निकाल दिए जाएं और दूसरे यहां आकर बस जाएं। यह हमारा घर है, किसी के कहने से नही छोड़ सकते। यहां स्पष्ट हो जाता है कि यह लड़ाई कितनी अहम् है और इसका राष्ट्रवादी आधार सामाजिक–आर्थिक स्तर पर कितना व्यापक है। यह पूरे दे"ा की बात है सिर्फ सूरदास की दस बीधा जमीन की नहीं।

इस प्रकार प्रेम चन्द ने 'रंगभूमि में विदे"ायों की औधोगिक, पूंजीवाद, भ्रष्टाचार जैसी नीतियों का खुलकर वर्णन किया है तथा भारतीय समाज को इनसे बचने के लिए आगाह किया है। स्वतंत्रता से पूर्व

भारतीय समाज का अंग्रेजों, पूंजीपतियों, महाजनों तथा सामंतों द्वारा अत्याधिक आर्थिक शोषण हुआ है। इस आर्थिक दुरावस्था के कारण शोषण के रूप में पूंजीपति, सरकार, उधोगपति, राजनेता, कर्मचारी–अधिकारी तथा समाज के मुखिये उपन्यास में उभरकर सामने आए है। प्रेम चन्द ने सामाज में आर्थिक वैषम्य का चित्रण अत्यन्त हृदयग्राही ढ़ग से प्रस्तुत किया है। प्रंम चन्द भारतीय ग्रामीण समाज की सज्जनता को प्रकट करते हैं–'वह खिलाड़ी, जिसके माथे पर कभी मैल नहीं आया, जिसने कभी हिम्मत नहीं हारी, जिसने कभी कदम पीछे नहीं हटाए। जीता, तो प्रसन्नचित रहा, हारा तो प्रसन्नचित रहा, हारा तो जीतने वाले से कीना नहीं रखा, जीता तो हारने वाले पर तालियां नहीं बजाई। जिसने खेल में नीति का पालन किया, कभी धांधली नही की, कभी द्वंद्वी पर छिपकर चोट नही की। भिखारी था, अपंग था, अन्धा था, दीन था, कभी भरपेट दाना नहीं नसीब हुआ, कभी तन पर वस्त्र पहनने को नहीं मिला, पर हृदय धैर्य और क्षमा, सत्य और साहस का अगाध भण्डार था। देह पर मांस न था, पर हृदय में विनय, शील और सहानुभूति भरी हुई थी।

भारतीय समाज विदे"ाियों के प्रहार प्रत्येक क्षण सहता रहा परन्तु अपने धैर्य और साहस को कभी मिटने का अवसर न दिया। उन पैसों के व्यापारियों के साथ सदैव इनका सधर्ष चलता रहा, जो उपन्यास में आदि से अन्त तक दृ"यमान है। आर्थिक पतन का एक अन्य मुख्य कारण प्रेम चन्द ने अंकित किया है,– वह है दे"ा में जनसख्या वृद्वि। प्रेम चन्द तिवनय सिंह के माध्यम से कहलाते है–'हमारे दे"ा में जनसख्या जरूरत से ज्यादा हो गई है। हमारी जननी संतान–वृद्वि भार को अब नही संभाल सकती। विधालयों मे, सड़कों पर, गलियों में इतने बालक दिखाई देते है कि समझ नही आता, यह क्या करेगें। हमारे दे"ा में इतनी उपज भी नही होती कि सबके लिए एक बार इच्छापूर्ण भोजन भी प्राप्त हो। भोजन का अभाव ही हमारे नैतिक और आर्थिक पतन का मुख्य कारण है।

भोजन की तृष्णा में व्यक्ति मजबूरन अपनी भावनाओं को कुचलता है और शोषण का ि"ाकार बनता है। परिणामस्वरूप आर्थिक विषमता की जड़े अधिक मजबूत बनती जाती है। पूंजीपति दिन– प्रतिदिन आर्थिक दृष्टि से बल"ााली बनते गए और भारतीय गरीब समाज को पराधीनता की बेड़ियों से कसते गए। प्रेम चन्द ने एक सच्चे दे"ाभक्त के रूप में भारतीय ग्रामीण समाज को डूबने से बचाया हैं। ब्रिटि"ा शासकों की कूटनीतियों से समयवद्व ग्रामीणों को जागृत किया है जिसे राष्ट्रीय मुक्त आन्दोलन को क्रातिकारी स्वर मिला है। परिणामस्वरूप आज आजदी की सांसो को लेता ग्रामीण भारत फल–फूल रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

हिन्दी के साहित्य निर्माता प्रेम चन्द–मदन गोपाल,
प्रेम चन्द साहित्यिक विवेचन – ि"ावकुमारी मिश्रा
प्रेम चन्द का कथा संसार– सं0 ड़ॉ नरेन्द्र मोहन